'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625,
Special Issue 210 : साहित्य व्यवहाराचे बदलते स्वरूप
Peer Reviewed Journal
ISSN : 2348-7143
December-2019

हिंदी भाषा का बदलता स्वरुप

डॉ. विष्णु जी. राठोड
श्रीमती पुष्पाताई हिरे महिला
महाविद्यालय, मालेगांव कैम्प,
तह.मालेगांव, जिला नासिक.
मोबाईल नं. ९४२०६२१९७५
Email - vgrathod80@gmail.com

समय गतिशील है। समय की गतिशीलता परिवर्तन को जन्म देती है। मानव के आसपास निरंतर परिवर्तन हो रहे है। स्वयं मानव भी कहाँ बच पाया है परिवर्तन से? इसी कारण से मानव की भाषा में भी परिवर्तन आवश्यभावी है। हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है। वहुत से परिवर्तनों से गुजरकर आने के बाद हिंदी का वर्तमान स्वरूप हमारे सामने आता है। हिंदी का मूल शब्दकोष संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं से उत्पन्न है। समय के साथ-साथ जब हिंदी भाषा अन्य भाषाओं से उत्पन्न है। समय के साथ-साथ जब हिंदी भाषी अन्य भाषाओं के संपर्क में आये तो हिंदी में अन्य भाषा के शब्दों प्रयोग भी आया हुआ हम देखते हैं।

भाषा न केवल व्यक्ति की वरन् राष्ट्र की सबसे बडी पहचान है। किसी भी राष्ट्र के लिए जितना बडा महत्व राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय संविधान का होता है उतना ही महत्व राष्ट्रीय भाषा का भी होता है। हमारे देश में लगभग १३० भाषाएँ और लगभग ३६८ बोलियाँ वोली जाती है, इसमें हिंदी भाषा का स्थान प्रमुख और महत्वपूर्ण है। हालांकि यह भी उतना ही सत्य है कि क्षेत्रीय भाषाओं की भी अपनी महत्ता है। भारत में प्रारंभ से संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रस आदि अपने-अपने काल में राष्ट्रीय भाषाएँ रही । ये मध्यदेश की भाषाएँ होने के कारण हिंदी इनकी सहज उत्तराधिकारीणी हुई। आठवीं शती में सिद्धों ने इसे स्वरुप देने की कोशिश की और दसवीं शती में अमिर खुसरों ने इस भाषा को जनता की भाषा वनाई। इसके पश्चात कबीर, नानक, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, रहीम, रसखान, देव, पद्माकर, घनानंद बिहारी से लेकर भारतेंदु तक अजस्त्रंधारा में हिंदी प्रवाहमान हो रही है। प्राय: माना जाता है कि वर्तमान हिंदी, जिसे हम खडीबोली कहते है उसका प्रारंभ भारेंदु युग से हुआ। जयशंकर प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी, प्रेमचंद, दिनकर, मैथिलीशरण गुप्त, बच्चन जैसे अनेक साहित्यकारों ने इसे गरिमा प्रदान की और इससे भी बडी बात यह कि बोलचाल और जनसंपर्क के लिए कन्याकुमारी से कश्मिर तक हिंदी का व्यवहार किया जाता है। पंडीत शंकरदयाल सिंह लिखते है, ``राष्ट्रभाषा के रुप में हिंदी भाषा को प्रतिष्ठित करने का श्रेय पूर्णतया महात्मा गांधी को है, जिन्होंने राष्ट्रीय संघर्ष के साथ इसे जोडा।``

किसी भी बनती हुई भाषा का स्वरुप स्थिर नहीं रहता और वह समय के साथ बदलता रहता है। हिंदी का जीवन मुश्किल से दो सौ साल का है। एक युवा भाषा के इस छोटें से जीवन में बनने और बिगडने की प्रक्रिया सतत रही है। किसी हिंदी भाषी के मुँह से आवेंगे, जावेंगे जैसे शब्द मुश्किल से सुनाई देते है। जबकि ७०-८० वर्ष पूर्व की हिंदी में ये शब्द अत्यंत स्वाभाविक थे। यह भाषा की स्वाभाविक गति है कि वह कठिनता से सरलता की तरफ बढे। इसी तरह एक भाषा में दूसरी भाषा की तरफ बढे। इसी तरह एक भाषा में दूसरी भाषाओं बोलियों के शब्दों का मिलना भी स्वाभाविक है, हिंदी अपने क्षेत्रों की बोलियों से बनी है तो उसमें यह मिलावट और अधिक है। अवधि, ब्रज, राजस्थानी, भोजपुरी, कुमाऊँनी और गढवाली के साथ मैथिली तथा पंजाबी के शब्द भी हिंदी में बहुतायत से आते रहें है और भी यह प्रक्रिया जारी है। अपने शब्दों,